

## स्वस्थ मिट्टी-सुरक्षित खेत-समृद्ध किसान : खेत बचाओ अभियान में वैज्ञानिकों ने बताए टिकाऊ खेती के उपाय

**खराखेड़ा (हनुमानगढ़),**

**08 जून।** कृषि विज्ञान केंद्र, ग्रामोत्थान विद्यापीठ, संगरिया द्वारा संचालित "खेत बचाओ अभियान" के अंतर्गत गांव खराखेड़ा में किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें 52 किसानों एवं ग्रामीण युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को मृदा स्वास्थ्य संरक्षण, संतुलित उर्वरक उपयोग तथा समन्वित कृषि प्रबंधन तकनीकों के प्रति जागरूक करना था।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता **वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. अनूप कुमार** ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि वर्तमान समय में मिट्टी की उर्वरता एवं उत्पादकता बनाए रखने के लिए **मृदा परीक्षण आधारित पोषक तत्व प्रबंधन** अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने बताया कि रासायनिक उर्वरकों के असंतुलित एवं अंधाधुंध प्रयोग से मिट्टी की गुणवत्ता में गिरावट आ रही है, जिससे फसलों की उत्पादन क्षमता प्रभावित हो रही है। उन्होंने किसानों से संतुलित उर्वरक उपयोग, जैविक स्रोतों के समावेशन तथा वैकल्पिक पोषक तत्वों के प्रयोग को अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि स्वस्थ मिट्टी ही टिकाऊ कृषि एवं किसानों की समृद्धि का आधार है।

गोष्ठी में **कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. चंद्रशेखर शर्मा** ने **समन्वित पोषक तत्व प्रबंधन (INM)** विषय पर जानकारी देते हुए मृदा परीक्षण रिपोर्ट के आधार पर उर्वरकों के उपयोग, जैव उर्वरकों, हरी खाद, गोबर खाद एवं फसल अवशेषों के समुचित प्रबंधन पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बताया कि रासायनिक एवं जैविक स्रोतों के समन्वित उपयोग से मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है तथा उत्पादन लागत में कमी आती है।

**डॉ. मुकेश कुमार** ने किसानों को **पशुपालन एवं पशुओं की वैज्ञानिक देखभाल** के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। उन्होंने पशुओं के संतुलित आहार, समय पर टीकाकरण, स्वच्छता एवं रोग प्रबंधन के उपायों पर प्रकाश डाला तथा कृषि एवं पशुपालन के एकीकृत मॉडल को किसानों की आय बढ़ाने का प्रभावी माध्यम बताया।

**सहायक निदेशक, केंद्रीय समन्वित कीटनाशी प्रबंधन केंद्र (CIPMC), श्रीगंगानगर, डॉ. प्रकाश चंद्रा** ने **समन्वित कीट प्रबंधन (IPM)** एवं **कीटनाशकों के न्यायसंगत उपयोग** पर व्याख्यान दिया। उन्होंने किसानों को कीटों की नियमित निगरानी, आर्थिक क्षति स्तर के आधार पर नियंत्रण उपाय अपनाने तथा रासायनिक कीटनाशकों के सुरक्षित एवं विवेकपूर्ण उपयोग के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अनावश्यक कीटनाशी प्रयोग से पर्यावरण, मानव स्वास्थ्य तथा लाभकारी कीटों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

**आईपीएल बायोलॉजिकल के प्रतिनिधि श्री अरविन्द कुमार** ने किसानों को **जैव उर्वरकों एवं जैविक उत्पादों** के उपयोग की उपयोगिता के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि जैव उर्वरक पौधों को आवश्यक पोषक तत्व उपलब्ध कराने के साथ-

साथ मिट्टी की जैविक सक्रियता को भी बढ़ाते हैं, जिससे दीर्घकालीन रूप से मिट्टी का स्वास्थ्य सुधरता है।

कार्यक्रम में **कृषि अनुसंधान अधिकारी डॉ. अनिल कुमार** ने किसानों को **वैकल्पिक उर्वरकों, सूक्ष्म पोषक तत्वों एवं आधुनिक कृषि तकनीकों** की जानकारी दी। उन्होंने जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों के बीच संसाधन संरक्षण आधारित कृषि पद्धतियों को अपनाने पर बल दिया।

गोष्ठी के दौरान किसानों की विभिन्न समस्याओं एवं जिज्ञासाओं का विशेषज्ञों द्वारा समाधान किया गया। किसानों ने मृदा परीक्षण, उर्वरक प्रबंधन, कीट नियंत्रण तथा पशुपालन से संबंधित प्रश्न पूछे, जिनका वैज्ञानिकों ने व्यावहारिक एवं वैज्ञानिक आधार पर उत्तर दिया।

**कार्यक्रम सहायक (प्रशिक्षण) श्री रघुवीर सिंह नैन** ने किसानों को कृषि विज्ञान केंद्र एवं कृषि विभाग द्वारा संचालित विभिन्न किसान हितैषी योजनाओं, फसल अवशेष प्रबंधन तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण संबंधी उपायों की जानकारी दी। उन्होंने किसानों से वैज्ञानिक अनुशंसाओं को अपनाकर खेती की लागत कम करने एवं उत्पादन बढ़ाने का आह्वान किया।

इसी दौरान कृषि विज्ञान केंद्र की टीम द्वारा ढेंचा की हरी खाद वाले खेतों का भ्रमण किया और किसानों के साथ संवाद किया।

कार्यक्रम के अंत में किसानों से "स्वस्थ मिट्टी - सुरक्षित खेत - समृद्ध किसान" के संकल्प को अपनाने तथा मृदा स्वास्थ्य संरक्षण के लिए वैज्ञानिक अनुशंसाओं का पालन करने का आह्वान किया गया। किसानों ने अभियान की सराहना करते हुए ऐसी जागरूकता गतिविधियों को ग्रामीण क्षेत्रों में निरंतर आयोजित करने की आवश्यकता व्यक्त की।

